कला एवं मनोरंजन उद्योग के लिए शिक्षण–प्रशिक्षण का केंद्र है

प्रदर्शनकारी कला विभाग (फिल्म एवं रंगमंच)

डॉ. सतीश पावडे

भारत का मनोरंजन उद्योग एक बडा उद्योग है जिसमें सभी ललित कलाएं,

प्रदर्शनकारी कलाएं तथा दृश्य कलाओं से शिक्षित-प्रशिक्षित छात्र रोजगार पाते हैं।

इसके अलावा प्रदर्शनकारी कलाओं की साधना कर सर्जनात्मक कलाओं के क्षेत्र

में अपना नाम दर्ज करवाते है। ऐसे सभी छात्र, कलाकारों के शिक्षण-प्रशिक्षण कार्य महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय वर्धा के प्रदर्शनकारी कला विभाग (फिल्म एवं रंगमंच) करता हैं।

सन 2009 में प्रदर्शनकारी कला विभाग की स्थापना की गयी, इस विभाग के माध्यम से रंगमंच तथा फिल्म की सभी इकाईयों का शिक्षण-प्रशिक्षण दिया जा रहा हैं। बी. वोक. (फिल्म निर्माण), बी. वोक. (अभिनय तथा मंच विन्यास), एमए, एम.फिल., पीएच.डी.(नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन) आदि स्नातक, स्नातकोत्तर पाठयक्रमों के अलावा अन्य डिप्लोमा का पाठयक्रम भी यहां पढाए जाते हैं। देश का यह एक मात्र केंद्रीय विश्वविद्यालय हैं, जहा इस प्रकार के पाठयक्रम संचालित किये जाते है। संचालित सभी पाठयक्रम विद्यार्थी अभिमूख तो है ही, साथ ही उसे व्यावहारिक, रोजगारपरक तथा कौशल शिक्षा पर आधारित बनाया गए है। रंगमंच और फिल्म पर आधारित शोध को भी प्राथमिकता दी गयी है।

चैतन्यशील तथा संवेदनशील परिवेश को बनाएं रखने तथा उस में वृद्वि करने का कार्य विभाग नियमित रूप से करता आ रहा है। विश्वविद्यालय की संस्कृति को अपने सांस्कृतिक क्रियाकलापों द्वारा यह विभाग हमेशा समृद्ध करता रहा हैं। विश्वविद्यालयों मे कलात्मक गतिविधियों को बढावा देना, विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संयोजन करना, विविध व्याख्यान आयोजित करना, देश के विभिन्न नाट्य समारोह, फिल्म समारोह मे भागिदारी करना आदी कार्य विभाग करता रहा है।

छात्रों में छिपे हुये कलागुणों को उजागर करना, उन्हें अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति हेतु मंच उपलब्ध करना, विविध प्रतियोगिताओं के लिए उनकी तैयारी करवाना इस विभाग का प्राथमिक कार्य हैं। अपने छात्र जीवन के कार्यकाल में छात्रों के अवकाश (स्पेस) को कलात्मक ढंग से अर्थ देने का प्रयास भी विभाग कर रहा हैं, राष्ट्रीय नाटय विद्यालय के पूर्व निर्देशक प्रों. देवेंद्र राज अंकुर, विश्व विख्यात नाटककार हबीब तनवीर, फिल्म अभिनेता ओम पूरी, डॉ. मोहन आगाशे, फिल्म निर्देशक गजेन्द्र अहीरे ,ललित परिमु, किशोर कदम, मिलिंद शिंदे, विख्यात नाटय निर्देशक प्रसन्ना, प्रोबीर गुहा, रंजीत कपुर , अभिनेत्री असिमा भट, सिनेमा के पितामह दादासाहेब फाल्के की पौत्री शरयु फाल्के, इदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सलाहकार प्रों. सच्चिदानंद जोशी, राष्ट्रीय पुतुल कलाकार पद्मिनी रंगराजन, फिल्म एवं नाटय अभिनेत्री गीता अग्रवाल, मुंबई विश्वविद्यालय के थिएटर एवं लोककला केंद्र के डॉ. मंगेश बन्सोड, डॉ. गणेश चंदनशिवे नियमित रूप से छात्रों को मार्गदर्शन करने आते रहे हैं।

रोजगारपरक तथा कौशल विकास शिक्षा पाठयक्रमों को लेकर भारत सरकार, मानव संसाधन मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग काफी संवेदनशील है । इन्हीं नितियों को ध्यान में रखकर प्रदर्शनकारी कला विभाग रंगमंच और फिल्मों के पाठयक्रम अधिक रोजगार परक तथा कौशल विकास पर आधारित पाठयक्रमों की पुनर्रचना कर रहा हैं। मनोरंजन उद्योग में उपलब्ध रोजगार के अवसरों को देखते हुए छात्रों को व्यावहारिक शिक्षण-प्रशिक्षण देने का प्रयास विभाग कर रहा हैं, इसलिए दिन ब दिन छात्रों की संख्या में वृद्धि हो रही हैं। नाटक, फिल्म का निर्माण, नाटक-फिल्म मे अभिनय, नाटक-फिल्मों का निर्देशन,

अनुप्रयोगात्मक लेखन, मंच विन्यास, प्रकाश विन्यास, वस्त्र सज्जा, रंगसज्जा, कला प्रबंधन आदि व्यावहारिक इकाईयों को अधिक पृष्ट करने का प्रयास जारी है।

किसी भी महाविद्यालय, विश्वविद्यालय का आधार छात्र ही होता है, इन्ही छात्रों से किसी भी संस्था की पहचान बनती है। यह पहचान ही किसी भी विश्वविद्यालय को, विभाग को गरीमा प्रदान करती है। विभाग के कई छात्र आज फिल्म और रंगमंच की दुनिया में , जन संचार माध्यमों की दुनिया में , जनसंचार माध्यमों की दुनिया में, लोकनाट्य के क्षेत्र में अपनी पहचान बना चुके हैं। उन्हें अपना करिअर बनाने में सफलता प्राप्त हुई है, तो कई छात्र संघर्षरत हैं।

कला पंरपरा का वर्धन कला चिंतन से से होता हैं। सिध्दांत के साथ व्यवहार के प्रयोग भी आवश्यक होते हैं। मौलिक शोध भी इस परंपरा को समृध्द करते है। इस प्रक्रिया में सबंद्ध कलाओं का अध्ययन, अंतर अनुशासनिक अध्ययन आवश्यक होता है। यह सभी तत्वों का एक मिला जुला रूप प्रदर्शनकारी कला विभाग है। रंग प्रक्रिया की एक अनवरत धारा यहां बहती है। आधुनिक भारतीय फिल्म उद्योग के, रंगमंच के क्षेत्र के नये मुहावरे यहाँ से गढ़े जा सकते है। अध्ययन और व्यवहार का एक नया दृश्य रूप हम इस विभाग के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं।

बडे शहरों में महंगे पाठयक्रम और सामान्य छात्रों की पहुंच से बाहर स्थानों के लिए प्रदर्शनकारी कला विभाग एक सक्षम विकल्प है, जहॉ ऐसे छात्र जो रंगमंच फिल्म और मनोरंजन, जनसंचार के क्षेत्र में अपना कैरियर बनाना चाहते है, उनके लिए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का प्रदर्शनकारी कला विभाग (फिल्म एवं रंगमंच) एक ऐसी धरातल है जो आपके सपने पूरे करने में सहायक बन सकता हैं।

डॉ. सतीश पावडे
विभागाध्यक्ष (प्रभारी)
प्रदर्शनकारी कला विभाग (फिल्म एवं रंगमंच)
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा
मोबाइल न. 9372150158
इ-मेल – satishpawade1963@gmail.com